अध्याय तृतीय
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रकिया

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी विशिष्ट प्रकिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान में प्रश्न करना, जाँच, गहन निरीक्षण, योजनाबद्ध अध्ययन, व्यापक परीक्षण और तत्परतायुक्त उद्देश्य सामान्यीकरण प्रकिया संनिहित होती है।

पी.वी.यंग के शब्दो में –

"अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है, जिनके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टी की जाती है तथा उनके उन अनुकमों पारस्परिक संबंधों, कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है, जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।[1]"

3.1 शोध प्रविधि –

किसी भी शोध कार्य में यह संभव नहीं हो पाता है कि सभी लक्षगत समष्टि को अध्ययन में शामिल किया जाय। अतः समष्टि की समस्त इकाईयों में से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों को कुछ निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाता है। उन संकलित इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। इस न्यादर्श के आधार पर ही अध्ययनगत निष्कर्ष घटित होते हैं–

"प्रतिदर्श या न्यादर्श एक समष्टि का वह अंश होता है, जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।[2]"

प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्त संकलन का विवरण निम्नलिखित है –

---

1. कपिल, एच.के. (1980) अनुसंधान की विधियां, नई दिल्ली हरी प्रसाद भार्गव प्रकाशनपेज–24
2. कपिल एच.के. (1980) अनुसंधान की विधियां, नई दिल्ली हरी प्रसाद भार्गव प्रकाशनपेज–77

3.2 भाषा विश्लेषण–

अध्ययन के लिए कक्षा ६ की हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तक को लिया। इस पुस्तक में एक गद्य पाठ जिसका नाम हार की जीत तथा लेखक श्री सुदर्शन है का चयन किया। उसी प्रकार एक पद्य पाठ खूनी हस्ताक्षर जिसके लेखक श्री गोपाल व्यास हैं का चयन किया ।

इन दोनों पाठों में प्रयुक्त एक–एक शब्द का गहन चिन्तन किया तथा कोश ग्रंथ की सहायता से उन शब्दों में से तत्सम तथा तद्भव शब्दों को अलग कर नोट किया।

3.3 न्यादर्श का चयन –

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श का चयन मध्यप्रदेश के भोपाल जिले की एक ग्रामीण व एक शहरी शाला यादृच्छिक विधि से किया गया।

शोध के न्यादर्श की विशेषताएं निम्नलिखित है –

1) इस शोध कार्य के अंतर्गत दो विद्यालयों के 100 छात्र–छात्राओं को लिया।

2) न्यादर्श के रूप में कक्षा ६ के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया। जिसमें 50 छात्र तथा 50 छात्राएं थी।

3) कक्षा ६ के विद्यार्थियों का चयन इसलिए किया गया क्योकि वे कक्षा तीसरी चौथी व पांचवी मे हिन्दी भाषा पढ़ चुके थे।

सिंगल ग्रुप पोस्ट टेस्ट डिजाईन अपनाया गया है ।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए प्रतिदर्श का चयन निम्न तालिका के अनुसार किया गया –

3.4 प्रतिदर्श का विवरण –

क.	शाला का नाम	शाला का प्रकार
1.	दीपशिखा शासकीय प्राथमिक शाला टी.टी.नगर भोपाल	शहरी
2.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय जामुनिया कला रायसेन रोड़, भोपाल	ग्रामीण

किसी समस्या के चयन के उपरान्त शोधकार्य करने के लिए उपकरणों की नितांत आवश्यकता होती है इसलिए यह आवश्यक है कि शोधकार्य के लिए उचित उपकरणों का प्रयोग किया जाय।

सारणी

परीक्षण का विस्तृत विवरण

क्र.	शब्दो के प्रकार	शब्दों की संख्या	अंक
1.	तत्सम शब्दों का अर्थ बताना	10	10
2.	तद्भव शब्दों का अर्थ बताना	10	10
3.	तत्सम शब्दों का वाक्यों में प्रयोग	5	10
4.	तद्भव शब्दों का वाक्यों में प्रयोग	5	10
	कुल	30	40

3.5 उपकरण का निर्माण –

किसी भी शोधकार्य हेतु आकड़े एकत्र करने के लिए उचित उपकरण का चयन अति महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्ता ने स्वयं हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तक के तत्सम, तद्भव शब्दों को अलग कर परीक्षण का निर्माण किया।

परीक्षण के निर्माण के बाद के विद्यार्थियों को एक प्रश्नावली दी गई जिसमें तत्सम व तद्भव शब्दों के अर्थ लिखना व वाक्यों में प्रयोग करना था। परीक्षण के लिये कुल अंक 40 निर्धारित किये गये। इसके लिए निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया– "तंत्सम व तद्भव शब्दों में उपलब्धि परीक्षण" परीक्षण पत्र का विवरण निम्नलिखित है– इस परीक्षणण पत्र में कुल 40 अंक है तथा प्रश्नों की संख्या 2 है ।

प्रश्न –1 निम्न शब्दों के अर्थ बताइये ।

इस परीक्षण में 20 शब्द रखे गये प्रथम 10 शब्द तत्सम थे व बाद के 10 तद्भव । इन शब्दो के अर्थ छात्रो को लिखने थे। इससे यह ज्ञात करना था कि छात्र

कितने तत्सम शब्दों को जानते हैं व कितने तद्भव शब्दों को जानते हैं। इसके लिये निर्धारित अंक 20 रखे।

प्रश्न–2 निम्न शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

शब्द से वाक्य बनाना : निर्धारित अंक –20 इनके अंतर्गत 10 शब्द दिये गये प्रथम पांच शब्द तत्सम व बाद के पांच तद्भव शब्द में। प्रत्येक शब्द से एक वाक्य बनाना था। प्रत्येक सही वाक्य बनाने पर 2 अंक दिये गये। इससे यह ज्ञात करना था कि तत्सम व तद्भव शब्दों में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि कितनी है।

3.6 प्रदत्तों का संकलन –

उपकरण के निर्माण के पश्चात् संबंधित विषय शिक्षकों से जांच करवाई गई और उनमें आवश्यक सुधार किया गया। तत्पश्चात् शोधकर्ता ने प्रत्येक विद्यालय में जाकर प्राचार्य से परीक्षण लेने की अनुमति ली। परीक्षण प्रारंभ करने से पहले निम्नलिखित निर्देश दिये गये–

1. आप सभी अपनी जगह पर बैठ जाईये। आपको दिया हुआ परीक्षण पूरी तरह पढ़ ले ।
2. जब तक कार्य प्रारंभ करने को न कहा जाय तब तक कार्य प्रारंभ न करें ।
3. दिये गये परीक्षण पत्र में स्वयं का नाम, कक्षा, पिता की शैक्षिक योग्यता एवं व्यवसाय, माता की शैक्षिक योग्यता लिंग छात्र–छात्रा आदि प्रविष्टियॉ पहले लिखने कहा गया।
4. अपना कार्य साफ सुथरे एवं स्पष्ट अक्षरों में लिखे। एक दूसरे की नकल तथा बातचीत करना मना है।
5. प्रत्येक प्रश्न को हल करने से पहले उसे समझ कर ही उत्तर लिखें। आपको उत्तर प्रश्न पत्र में निर्धारित स्थान पर ही लिखने है यदि कोई समस्या है तो पूछ सकते हैं ।

शोधकर्ता ने स्वयं निरीक्षण करते हुए परीक्षण का कार्य संपन्न किया। परीक्षण कार्य पूर्ण करने के उपरांत सभी विद्यार्थियों से परीक्षण पत्र संग्रहित किया। अंत में सभी परीक्षण पत्र की ध्यानपूर्वक जॉच करके अंको की गणना की गई।

3.7 प्रयुक्त सांख्याकी –

प्राप्त आंकड़ों संकलित कर प्रतिशत ज्ञात कर ग्राफ द्वारा प्रदर्शित कर विश्लेषण किया गया है।

————00————